101

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-8

(प्रश्न पत्र-II)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

DTVF OPT-24 HL-2408

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक : 250* *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Rombhrosh Saron

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? [हाँ ✓] [नहीं]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 8, 16/08/2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

2	2	0	1	5	6	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

$10 \times 5 = 50$

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ: व्याख्येय पंक्तियाँ ~~नयी~~ नई कहानी के दौर की रचना 'एक नाव के यात्री' से उद्धृत है जो राजेंद्र यादव के संकलन 'एक दुनिया समानांतर' का हिस्सा है। शायद इस कहानी में नारी के स्वीकार करने की भावना को चित्रित करते हैं।

प्रसंग: इन पंक्तियों में मि. मित्तल को पति से अलग होने के बाद फिर से रिश्ता जोड़ने का समझौता करने की नसीहत दी गई है।

विशेष: मि. मित्तल अपने पति से दूर रह रही है लेकिन आर्थिक निर्भरता की वजह से उसका जीवन निरर्थक हो गया है। इसीलिए उसे फिर से गृहस्थी बसाने का विकल्प प्रस्तुत कर रही है। साथ में यह भी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

कहती है कोई अतीत की चीज अगर मूल्यवान हो तथा टूट जाए लेकिन फिर भी उससे जुड़ाव बना रहता है।

भाव-सौंदर्य

- आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष संबंध का टूटन की वजह से स्त्री के जीवन में आने वाले भूचाल को उद्घाटित करती है।
- आर्थिक व सामाजिक निर्धनता की ऐसी समस्या 'टूटना' व 'एक और जिंदगी' में भी।

शिल्प-सौंदर्य

- प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग → मानवीय रिश्तों की तुलना वस्तुओं से।
- सहज, सरल भाषा में अर्थव्यंजकता बढ़ी है।
- बिंबात्मक भाषा – 'टूट-फूट जाने पर' – दृश्य बिंब

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी के पहले महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' (1936) से अवतरित है। मुंशी प्रेमचंद अपने यथार्थवादी नज़रिये से किसान, नारी व दलित वर्ग की समस्याओं को केंद्र बनाकर सामाजिक-यथार्थवाद प्रस्तुत करते हैं।

प्रसंग: इन पंक्तियों में मिस मालती पूंजीवादी सभ्यता में धन की महत्ता का बखान कर रही है।

व्याख्या: मिस मालती के अनुसार महाजनी सभ्यता का केंद्र बिंदु धन है। जिसके सामने जाति, कुल, भाव आदि का कोई महत्व नहीं। धन के बल पर किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक किया जा सकता है। यहाँ तक कि धन ही रोगियों के इलाज में प्राथमिकता के साथ-साथ

उनके साथ बर्ताव का ~~विश्वास~~ रास्ता सुझाता है।

विशेष :

- पूंजीवादी सभ्यता में गरीब के शोषण की स्वास्थ्य-क्षेत्र में भी पहुँच।
- मानवीय मूल्यों की ऐसी ही दुर्गति 'मैला-आँचल' में बावनदास के माध्यम से दिखाई है- 'भारतमाता रो रही है।'
- हिन्दुस्तानी शैली में सुंदर वाक्य-विन्यास।
- तत्सम व तद्भव शब्दों का मिश्रण
- प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है- मानो साक्षात् देवी।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) कला केवल उपकरण मात्र है, कला जीवन के लिये और उसकी पूर्ति में ही है। जीवन से विरक्ति और जीवन के उपकरण से अनुराग का क्या अर्थ?... किसी का जीवन अन्य की तृप्ति और जीवन की पूर्ति का साधन मात्र होकर रह जाय? वह जीवन सृष्टि में अपनी सार्थकता से सृष्टि में नारी के जीवन की मौलिक सार्थकता से वंचित रह जाय? जैसे सेवा के साधन दास का जीवन!...भयंकर प्रवंचना!

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ: व्याख्येय गद्यांश मार्क्सवादी व मानववादी नाटककार यशपाल की नारी-प्रधान रचना दिव्या (1945) से उद्धृत है। लेखक ऐतिहासिक आवरण में तत्कालीन समाज की समस्या यथा नारी, जाति, अन्याय आदि को उजागर करता है।

प्रसंग: अंशुमाला की ये पंक्तियाँ कला की उपयोगिता के बारे में बताती है।

व्याख्या: इन पंक्तियों में कला को साध्य न मानकर, साधन माना गया है। कला का उपयोगितावादी नज़रिया जीवन की पूर्ति का साधन है। किसी भी व्यक्ति का जीवन अन्य के लिए अगर साधन बन जाता है तो सृष्टि में उसकी सार्थकता नष्ट हो जाती है। ऐसी दास-व्यवस्था तो भयंकर पाप है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भाव-सौंदर्य

- सार्थक जीवन जीने का महत्व 'मानववादी' दर्शन को प्रतिपादित करता है।
- 'दास-व्यवस्था' जैसी विद्रूपताएँ मानव का वस्तुकरण कर देती हैं। ऐसा ही उल्लेख डॉ. रामविलास शर्मा ने 'तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य' में कोल-किरातों के माध्यम से बताया है।
- तत्समबहुला भाषा का प्रयोग वातावरणानुकूल है- भयंकर प्रवंचना।
- नारी के सृष्टि में महत्व को प्रगतिवादी रचनाकार 'समतामूलक' कहते हैं।
- सरल व सहज भाषा में विराम व प्रश्नवाचक-शैली का प्रयोग अर्थव्यंजकता बढ़ा देता है।

(घ) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यावतरण आ॰ रामचंद्र शुक्ल के चिंतामणि खंड में संकलित निबंध 'कविता क्या है' से अवतरित है। शुक्लजी इसके माध्यम से कविता की (वैज्ञानिक-शैली अपनाते हुए) कसौटियाँ गत॰ रहे हैं।

प्रसंग: इन पंक्तियों में कविता को मनुष्य जीवन में महत्ता को प्रतिपादित किया है।

व्याख्या: कविता का उद्देश्य केवल सौंदर्य का प्रस्तुतीकरण नहीं वरन् ~~कर्म~~ समाज के साथ जुड़कर उसकी मनोवृत्ति को भी सबके सामने लाना है। वह जिस प्रकार समाज की सुंदर चीजों को साहित्य का हिस्सा बनाती है, उसी प्रकार वास्तविकता अर्थात् उदार, त्याग, दया आदि भावों को भी अपना हिस्सा बनाना चाहिए।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

भाव-सौंदर्य :

① 'रस की लोकमंगलवादी' धारणा का प्रतिपादन किया है।

② प्रेमचंद भी सिर्फ मनोरंजन को प्रतिपादित करने वाले साहित्य को दो कौड़ी का मानते हैं।

③ प्रतीकात्मक व बिंबात्मक भाषा का प्रयोग अर्थगर्भित्व को बढ़ा देता है- रमणी के मुखमण्डल।

④ विश्लेषणात्मक - शैली के साथ परिदृश्यात्मक शैली का अच्छा प्रयोग।

⑤ मानक भाषा में तत्सम व तद्भव शब्दों का सुंदर समावेश।

(ङ) अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। ... दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ: व्याख्येय पंक्तियाँ हिंदी साहित्य के समर्थ आंचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु की रचना 'मैला - आँचल' (1954) से ली गई है। रेणु ने भौगोलिक व सांस्कृतिक विशिष्टताओं के माध्यम से अंचल को ही नायक बना दिया है।

प्रसंग: इन पंक्तियों में व्यक्ति के जीवन की स्थिति की मार्मिक अभिव्यंजना है।

व्याख्या: इस समाज में जो चीज प्रत्यक्षत: उपलब्ध नहीं उसका कोई विश्वास नहीं करता। आदमी की आदमीयत का कोई मोल नहीं, उसकी भावना व उसके दर्द का मूल्य बहुत कम है। दिल का अहसास मनुष्य की बातों से होने लगा है। अगर मनुष्य में भावना नहीं है तो वह जानवर हो जाएगा।

दिल को भगवान के मंदिर जैसी ऊँची जगह दी है जहां देवता यानि मानवीय मूल्य निवास करते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भाव- सौंदर्य व शिल्प सौंदर्य :

- विजातीय शब्दों का सुंदर - प्रयोग - एडिलीन
- चेतना- प्रवाह- शैली के माध्यम से सुंदर अभिव्यंजना।
- उपमाओं का सुंदर प्रयोग - दिल वह मंदिर है।
- सूत्र- शैली का प्रयोग द्रष्टव्य है- उस दर्द को पिया दो, आदमी जानवर हो जाएगा।
- विश्लेषणात्मक - शैली से तर्कों के साथ विवेचन व मनन।

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'गोदान' (1936) उपन्यास मुंशी प्रेमचंद का चरम-यथार्थवादी उपन्यास है जिसमें किसानी व दलित, नारी, विधवा आदि समस्याओं को केन्द्र बनाया गया है।

'होरी' और 'गोबर' के माध्यम से गोदान में न सिर्फ पीढ़ी-संघर्ष को बताया बल्कि ढहते सामंतवाद व उभरते पूंजीवाद को भी उभारा। डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में, "होरी एक पारंपरिक किसान है जबकि गोबर एक अधिकारों को पहचानने वाला नई पीढ़ी का किसान है।"

इसीलिए गोबर का चरित्र ज्यादा संभावनाशील है।

① यथार्थ व आदर्श: होरी धर्म, मरजाद व

बिरादरी में उलझा हुआ आदर्शवादी किसान है जबकि गोबर लोकतंत्र के मूल्यों को जानने वाला आधुनिक किसान। जो यथार्थ को पहचान चुका है व उसे बदलना चाहता है -

'हम सब इस बिरादरी के चाकर हैं। इससे बाहर नहीं जा सकते।' - होरी

'जब जेब में पैसा हो तो हुक्का-पानी कोई नहीं पूछता।' — गोबर

ⓒ मानसिकता : होरी ~~यथास्थितिवाद~~ यथास्थितिवादी मानसिकता से ग्रस्त है।

'जब दूसरों के पैरों तले अपनी गर्दन दबी हो तो उसे सहलाने में ही कुशल है।' - होरी

जबकि गोबर अपने हक की लड़ाई व विद्रोही चेतना के माध्यम से परिस्थितियों को बदलने में विश्वास रखता है -

'मुख पर विद्रोह व असंतोष की भावना है।'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

⊙ सामंतवाद व पूंजीवाद: होरी सामंतवादी शोषण को अपनी नियति मान चुका है-

'जब ईश्वर ने ही गरीब बनाया तो इसमें अपना क्या बस है।'

जबकि गोबर धार्मिक बेड़ियों से मुक्त होकर समतामूलक समाज की स्थापना करने की बात करता है-

'भूखे नंगे रहकर भगवान का भजन करें तो हम भी देखें।'

⊙ मूल्यों की असमानता: होरी मरजाद व किसानी के मूल्य को मजदूरी जैसे आधुनिक चीजों से हीन मानता है-

'खेती में जो मरजाद है वह नौकरी में नहीं।'

जबकि गोबर पूंजीवादी सभ्यता में मजदूरी को किसानी जैसा ही महत्व देता है- मजदूरी में कोई पाप तो नहीं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(i) विद्रोह की चेतना: होरी धर्म व मरजाद के दुष्चक्र में पड़ा हुआ वह किसान है जिसका जीवन ऋण का भुगतान करने में ही निकलता जा रहा -

'इस बार रिण से गला छूटे तो दूसरी जिंदगी हो।'

जबकि गोबर शहर में रहकर मजदूरी करने लगा है तथा विद्रोही चेतना से बदलाव लाने की इच्छा जगाता है -

'लड़के के विद्रोह के भाव को दबाना जरूरी था।'

इस प्रकार होरी का चरित्र शोषण की जटिल व्यवस्था में घुट-घुटकर दम तोड़ने को मजबूर है जबकि गोबर यथार्थवाद की दुनिया में आँख से आँख मिलाने की चेष्टा रखता है जो ज्यादा संभावनाशील है।

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'खोई हुई दिशाएँ' कमलेश्वर की नई कहानी के दौर की रचना है जिसमें मध्यवर्गीय व्यक्ति की पहचान का संकट की समस्या मुखरित हुई है।

चन्दर गाँव से शहर आता है लेकिन शहर में उसे आत्मीयता व सहजता का भाव महसूस नहीं होता। इस भीड़ में अकेलापन उसे चुभ रहा है -

'उसे और कुछ नहीं चाहिए, पहचान की एक माँग है।

वह अपने दोस्त आनंद से मिलता है लेकिन उसकी अवसरवादिता दोनों के मध्य सहज संबंध नहीं होने देती। वह देश की राजधानी में है जहाँ सब कुछ होते हुए भी अजनबीपन

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

व **निरर्थकता बोध** का अहसास उसे लग रहा है -

'और यह राजधानी जहाँ सब कुछ अपना है, अपने देश का है, --- पर कुछ भी अपना नहीं है, अपने देश का नहीं है।'

कई ऐसे मौके आते हैं जब उसे जाने-पहचाने चेहरे दिखते हैं लेकिन जैसे ही वह बात करता है **स्वार्थपरकता** उस अहसास को धूमिल कर देती है।

शहर की ये सड़के वैसे तो हर दिशा में जा रही है लेकिन सही मायनों में उसे कहीं नहीं ले जा रही। अंतत: वह अपनी पोस्ट इन्हा के घर आता है। लेकिन जब इन्हा पूछती है - 'चीनी कितनी दूं?" उसके मन में रिश्तों की उम्मीद टूट जाती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अंततः वह जब घर पर पहुँचता है व निर्मला (पत्नी) को देखता है तो उसे राहत की साँस मिलती है। लेकिन 'पहचान का संकट' उसे रात में भी झकझोरता है -

"चन्दर - मुझे पहचानती हो, निर्मला ?
निर्मला - क्या हुआ ?"

शिल्प के स्तर पर 'खोई हुई दिशाएँ' सहज, सीधा व सरल कथानक है जिसमें अन्तः संघर्ष को दिखाया गया है। मनोविज्ञान का सहारा लेते हुए अन्तर्मन के भाव सकारात्मक व नकारात्मक रूप से उद्घाटित हुए हैं। विरोधाभासों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है जो नई कहानी की विशेषता है।

इस प्रकार 'खोई हुई दिशाएँ' संवेदना व शिल्प के धरातल पर नई कहानी की प्रतिनिधि कहानी है।

(ग) 'दिव्या' उपन्यास में इतिहास किस रूप में उपस्थित है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यशपाल एक मार्क्सवादी व मानववादी रचनाकार है जिन्होंने 'दिव्या' की रचना 1945 में की। ऐतिहासिक आवरण में यशपाल ने कलात्मकता का प्रयोग करते हुए समकालीन समाज की समस्याओं को उभारा।

यशपाल का <u>इतिहासबोध</u> 'दिव्या' के शाककथन के माध्यम से समझा जा सकता है -

'इतिहास विश्वास की वस्तु नहीं, विश्लेषण की वस्तु है। इतिहास मानव का अपनी सभ्यता में <u>आत्म-विश्लेषण</u> है।'

यशपाल इतिहास के विश्लेषण के माध्यम से '<u>भविष्य में समाधान का संकेत</u>' खोजने का प्रयास कर रहे हैं। 'दिव्या' में इतिहास <u>केवल संकेत</u> के रूप में मौजूद है - तीन ऐतिहासिक चरित्र (पुष्यमित्र,

दृष्टि The Vision

पतंजलि व मिलिंद) तथा तीन ऐतिहासिक जगह (मगध, सागल, मालव) ।

यशपाल के अनुसार इतिहास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो पुनरावृत्ति नहीं करती । इतिहास की सहारा लेकर वे वर्ण, जाति, ~~नारि~~ नारी आदि समस्याओं को उजागर करते हैं -

'जन्म का अपराध ! अगर वह अपराध है तो उसका मार्जन किस प्रकार संभव है ?'

- पृथुसेन (वर्ण - समस्या)

नारिप्रधान उपन्यास होने के कारण 'दिव्या' में महिलाओं द्वारा सम्पूर्ण जीवन - चक्र में जिन समस्यायें का सामना किया जाता है, उनका उल्लेख है। चाहे वह डारा बनकर दासी की समस्या, फिर अभावग्रस्त जिंदगी में पुत्र शाकुल को खो देना, उसके बाद जीवन में निराशा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

के चलते वैश्यावृत्ति जैसा कठोर निर्णय लेना।

लेकिन अंततः दिव्या 'स्वत्व' को पहचानती है जो यशपाल 'आत्म-विश्लेषण' से खोजते हैं:-

'कुलरानी का पद आर्य पुरुष का प्रश्रय मात्र है। दासी हीन होकर भी आत्मनिर्भर रहेगी। स्वत्वहीन होकर वह जिंदा नहीं रह पाएगी।'

इस प्रकार यशपाल मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का सफल प्रयास करते हैं तथा नारी व पुरुष के संबंधों को समकक्ष रखने की सफल कोशिश करते हैं -

मारिश - 'आर्य आश्रय का आदान-प्रदान चाहता है।'

दिव्या (आर्द्र स्वर में) - 'आश्रय दो आर्य।'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

3. (क) अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

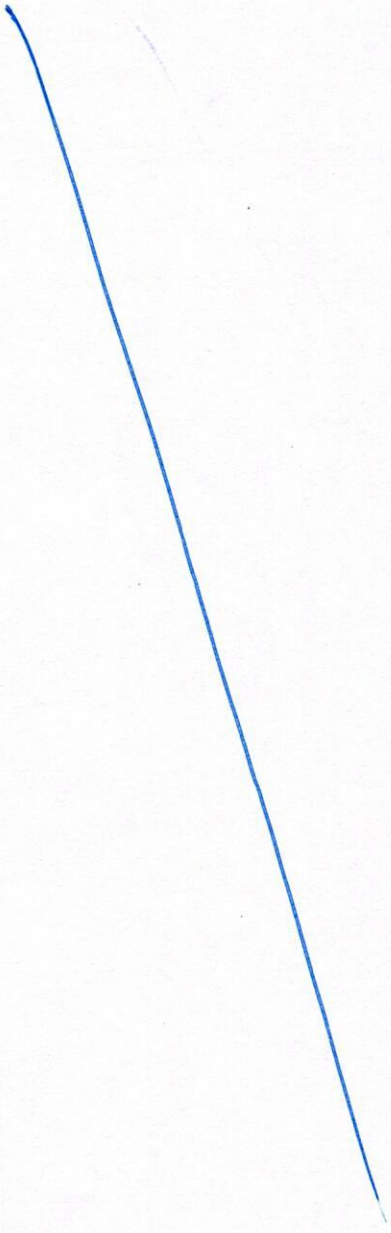

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

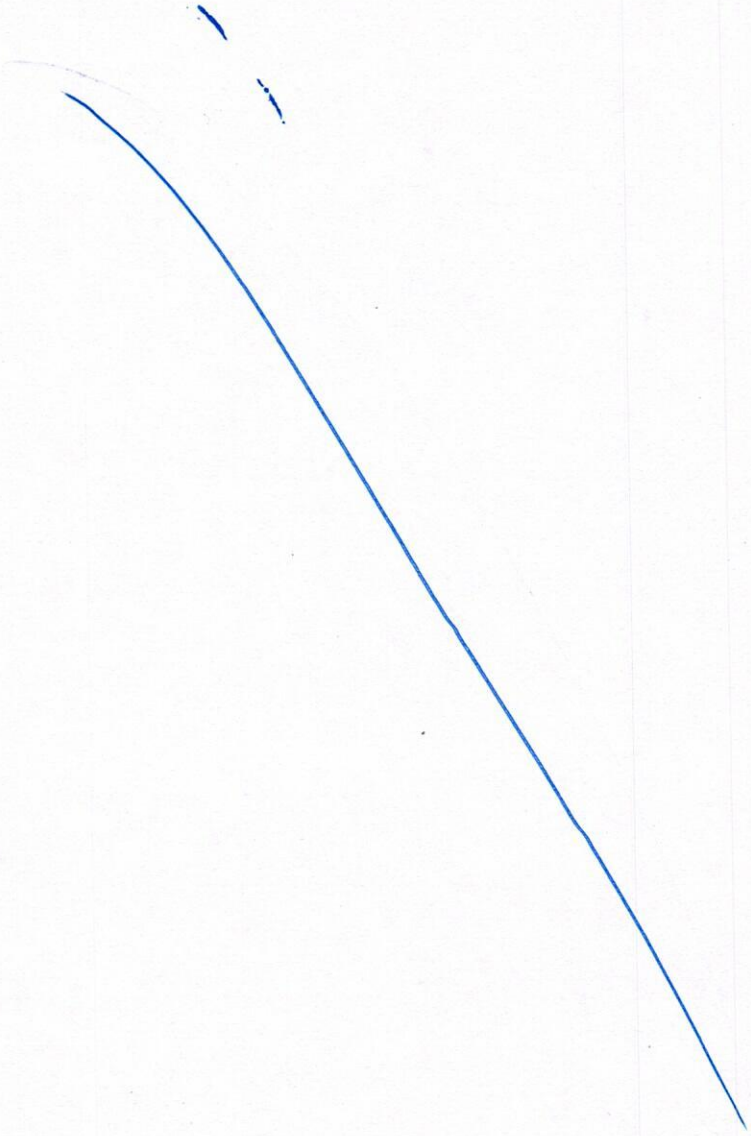

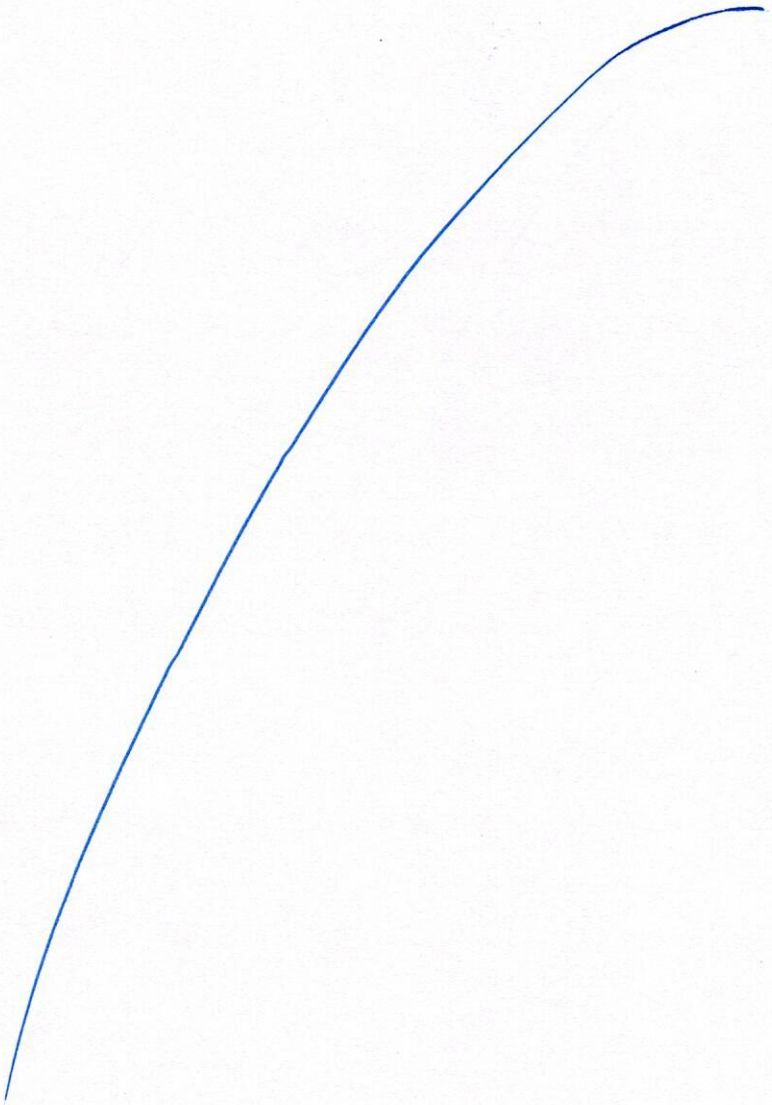

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

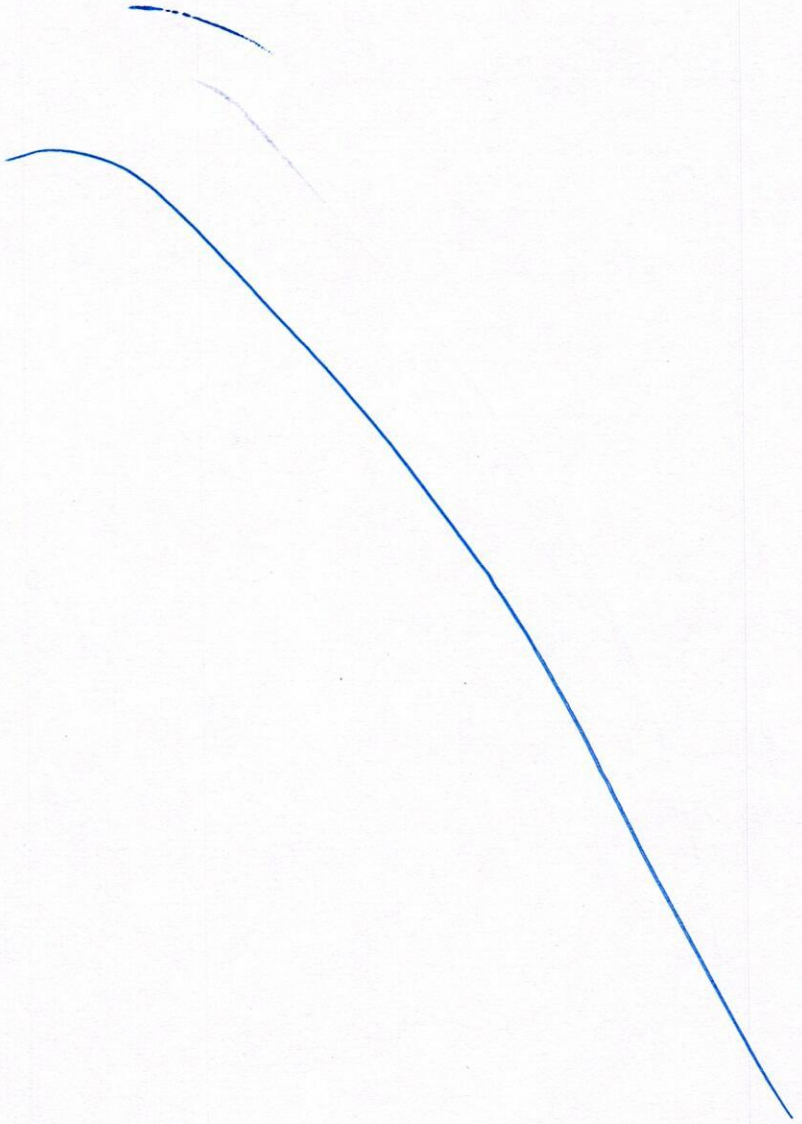

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

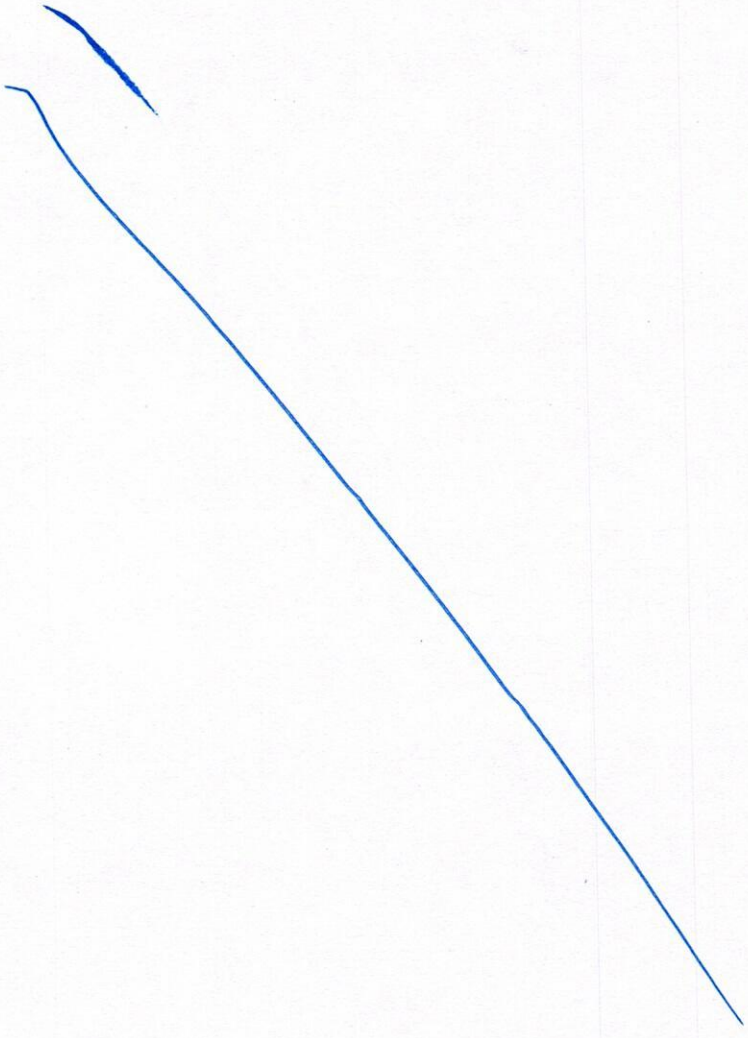

(ग) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास का अवलोकन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

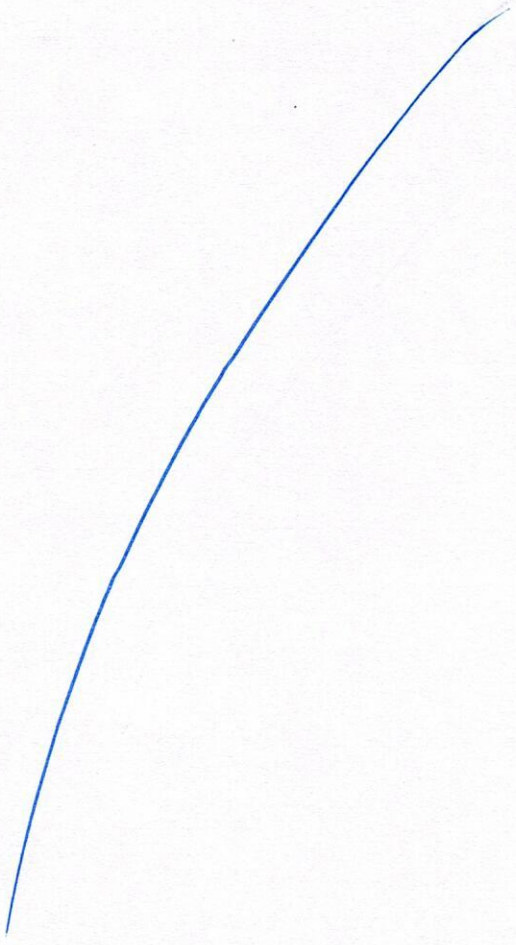

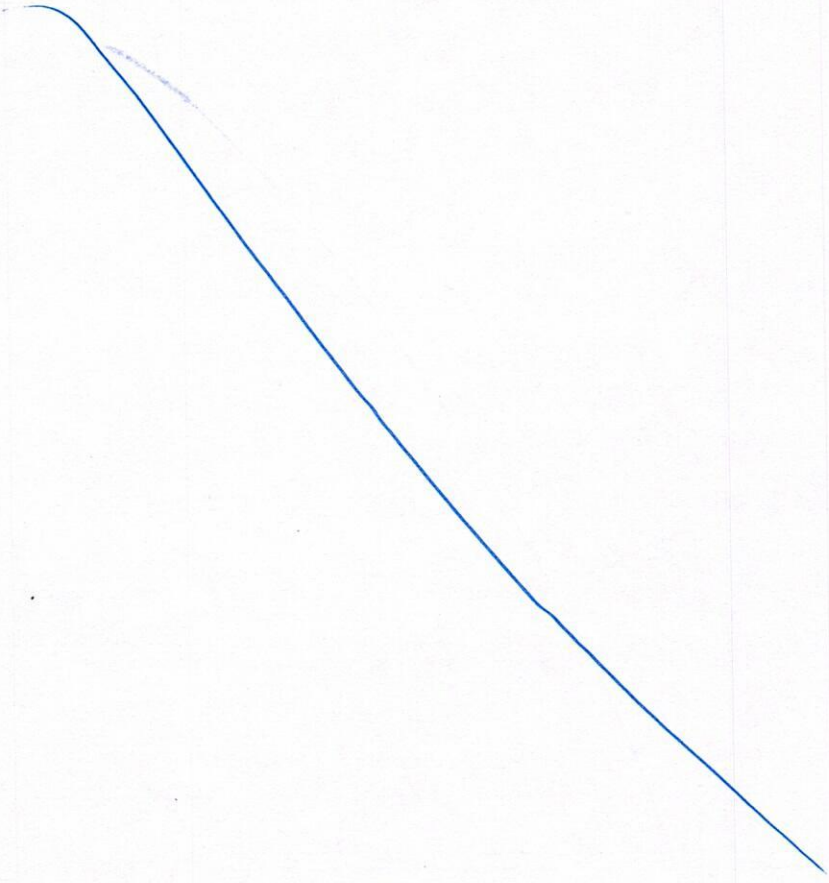

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

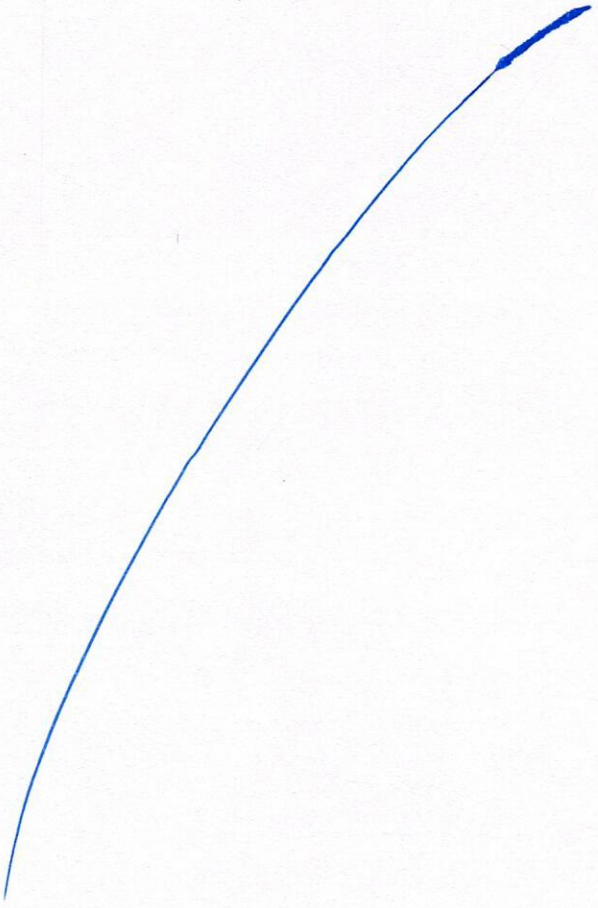

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

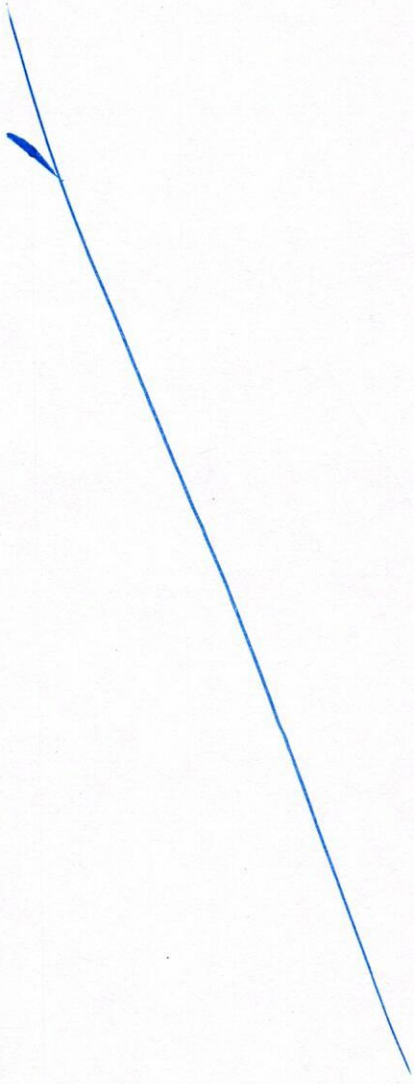

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

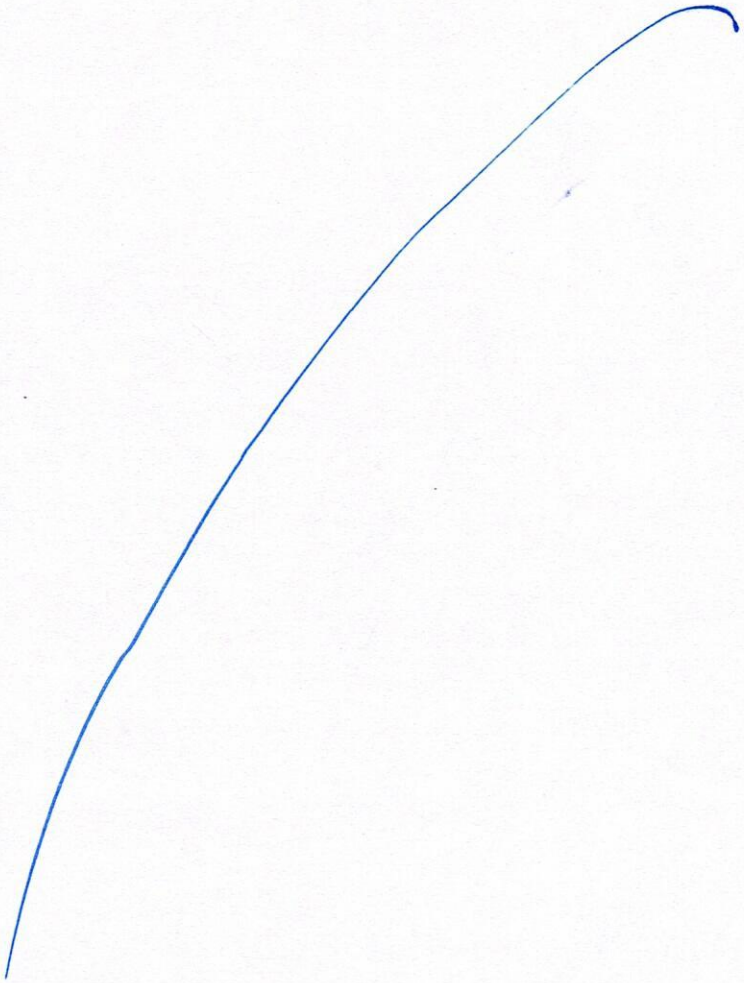

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

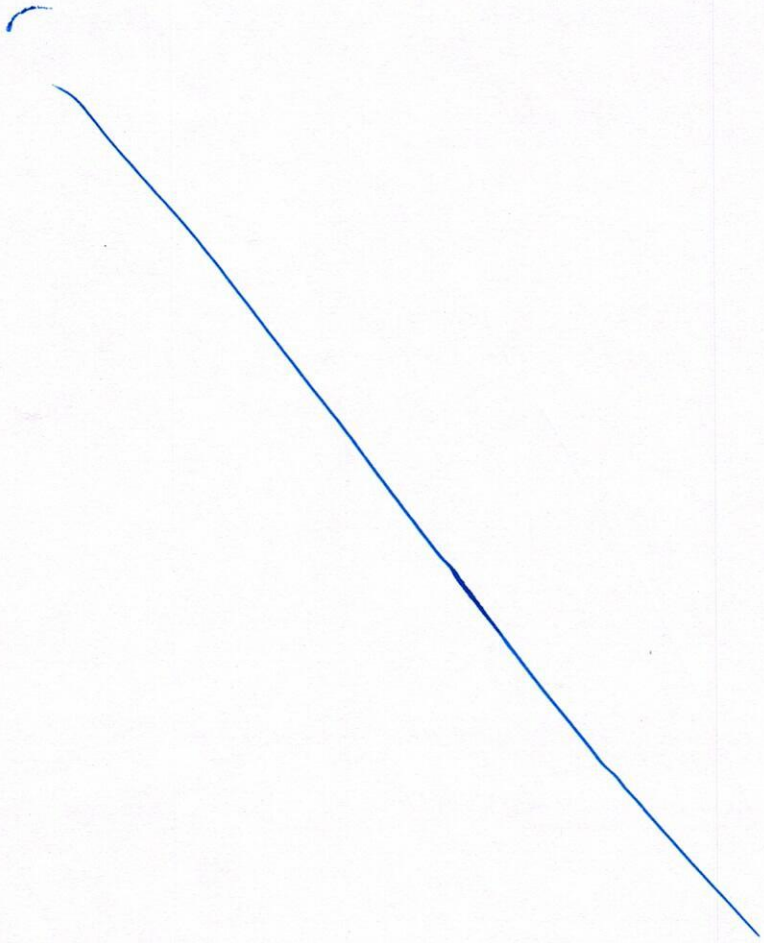

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

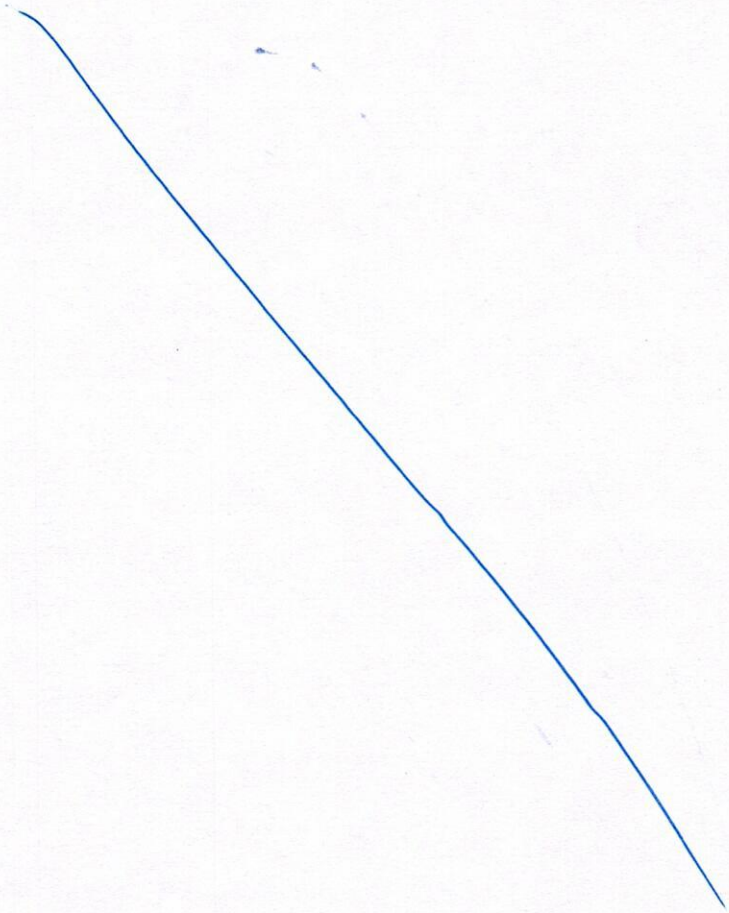

(ग) 'चिन्तामणि' के निबंधों में प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन का चरम आदर्श लक्षित होता है। विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियां व्यक्तिवादी लेखक अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' से अवतरित है जिसमें अज्ञेय ने 'काल के आलोक में' घटने वाली हर घटना को अनश्वर व निरंतर बताया है।

प्रसंग: इन पंक्तियों में अज्ञेय प्रश्नों को पूछने को ही उनकी सार्थकता बताते हैं।

व्याख्या: कुछ प्रश्नों की सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जाता है कि उन प्रश्नों तक पहुँचे या नहीं। सभी प्रश्नों का उत्तर जानना न तो संभव है न जरूरी। बस जिज्ञासापूर्ण भाव से व्यक्ति को प्रश्नों तक पहुँचने का प्रयास करना

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

चाहिए।

विश्लेषण :-

① विश्लेषणात्मक शैली से तार्किकता का परिचय।

② तत्सम व तद्भव शब्दों का मिश्रण आकर्षक - जिज्ञासुवत् प्रश्न।

③ बिंबात्मक भाषा का प्रयोग - प्रश्न तक पहुँचना। (दृश्य बिंब)

④ प्रेमचंद ने भी अपने निबंध 'साहित्य का महत्व (प्रगतिशीलता)' में जिज्ञासा को रचनाकार का अहम् हिस्सा माना।

⑤ मानक भाषा का प्रयोग विश्लेषण को गहरा करता है।

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

सेवर्स:

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) हमने एक दूसरा उपाय सोचा है, एडूकेशन की एक सेना बनाई जाय। कमेटी की फौज। अखबारों के शस्त्र और स्पीचों के गोले मारे जायँ। आप लोग क्या कहते हैं?

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ: व्याख्येय पंक्तियाँ आंचलिक उपन्यास धारा के पहले लेखक फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला-आँचल' (1954) से ली गई है। रेणु ने अंचल को नायक बनाकर सांस्कृतिक व भौगोलिक विशिष्टताओं का सुंदर संसार बनाया है।

प्रसंग: इन पंक्तियों में व्यंग्य के माध्यम से तत्कालीन समाज की समस्याओं का हल ढूंढने का प्रयास है।

व्याख्या: समाज में व्याप्त सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा की सेना बनाने का उल्लेख है। कमेटी की फौज व अखबारों तथा भाषणों के माध्यम से हल निकालने का असफल प्रयास करने की चेष्टा की है।

दृष्टि The Vision

भाव-पक्ष :

- 'मोहभंग' की ऐसी ही स्थिति नई कहानी की रचनाओं 'दूरन' 'एक और जिंदगी' में विद्यमान है।

- अंग्रेजी व तद्भव शब्दों का सुंदर प्रयोग - एडुकेशन, कमेरी।

- प्रतीकात्मक व उपमाओं का प्रयोग असर को गूढ़ करता है - अखबारों के रास्ते।

- भाषा प्रवाहमयी व संवाद छोटे व गतिशील है।

- व्यंग्यात्मक-शैली का प्रयोग तल्खी से किया है - शिक्षा की फौज।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ) तुम्हारे दुख की बात भी जानती हूँ। फिर भी मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता। मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिये वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है...।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ: व्याख्येय गद्यांश मोहन राकेश के पहले नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' (1958) से अवतरित है। राकेश नाटकों के सरताज है जिन्होंने रंगमंच को नाटक से जोड़ने का अद्भुत साहस किया।

प्रसंग: इन पंक्तियों में मल्लिका, कालिदास को अपनी मन:स्थिति बताती है।

व्याख्या: मल्लिका कहती है कि वह कालिदास के दुख को जानती है। फिर भी उसे उसके निर्णय पर कोई ग्लानि नहीं। उसने अपने अन्तर्मन की आवाज को सुनकर वह निर्णय लिया है जो बाकि सभी रिश्तों से बड़ा है। उसकी भावनाएं पवित्र व अनश्वर है जिनपर कोई लांछन नहीं लगा सकता।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

भाव-पक्ष

① मल्लिका का विलोम की बेटी की माँ बनना उस अप्रासंगिकता को दिखाता है जो कालिदास का कश्मीर का शासन संभालने के बाद मिली।

② नाट्य भाषा का प्रयोग सुंदर व आकर्षक है - भावना में एक भावना का वरण।

③ 'व्यक्तित्व विभाजन' की ऐसी समस्या 'नई-कहानी' की लगभग हर कहानी में मिलती है जैसे - सामान, सेलर

④ छोटे संवादों के साथ विराम चिन्हों का सुंदर प्रयोग।

⑤ तत्सम व तद्भव शब्दों का प्रयोग सुंदर।

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मुंशी प्रेमचंद का महाकाव्यात्मक उपन्यास गोदान (1936) तत्कालीन समाज का एलबम है जिसमें ग्रामीण जीवन के साथ-साथ शहरी जीवन को भी समेटा गया है।

'शहरी कथा' को समावेशित करने के मुख्य कारण निम्न है-

① समग्रता: प्रेमचंद अपने समाज की हर उस समस्या को दिखाना चाहते थे जो शोषण-वर्ग को न्याय से वंचित रखती है। जमींदार, राजनेता, व्यापारी, पत्रकारिता आदि लोगों का निवास शहर में ही था-

'जो गरीबों को लूटता है, उसे लूटने में मन को ज्यादा नहीं समझाना पड़ेगा।'

- ओंकारनाथ

② ग्रामीण-शहरी जीवन का मिलन: प्रेमचंद

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बताना चाहते थे, गाँवों की कुछ समस्याओं की जिम्मेदारी शहरी वर्ग के लोगों की भी है। जैसे जमींदार सामंतवादी व्यवस्था का केन्द्र है जो शहर में बसता है।

⊙ वंचित वर्ग का शोषण: गाँव व शहर दोनों में निम्न जाति के लोगों का ही शोषण होता है। चाहे वह होरी हो या गोबर।

'दिनभर की थकान व मानसिक अवसाद शराब में डुबोया करते थे।' - मजदूर

⊙ आदर्शवाद का प्रक्षेपण: प्रेमचंद अपने आदर्शवाद को शहरी चरित्रों के माध्यम से प्रक्षेपित करना चाहते थे जैसे - मालती, गोविन्दी।

'मैंने यह निर्णय किया है कि दोस्त बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं

ज्यादा सुखकर है।' - मालती

- **मुनाफे की दुनिया व मेहनत की दुनिया का द्वन्द्व:** प्रेमचंद होरी व मि. खन्ना जैसे चरित्रों के माध्यम से इस द्वन्द्व को पाटना चाहते थे -

'ये जो सैंकड़ों करोड़पति बैठे हैं सब स्पेकुलेशन के कारण ही बने हैं।' - मि. खन्ना

- **यथार्थवाद:** प्रेमचंद 1936 के समाज को हूबहू उसी प्रकार दिखाने चाहते हैं जैसा वह उस समय उपस्थित था -

गाँव और शहर को जोड़ने वाले केवल तीन प्रसंग → धनुष यज्ञ (रायसाहब)
└→ गोबर (गाँव से शहर)
└ मेहता जी व मिस मालती

- ~~सीमाएँ: प्रेमचंद पर ये आरोप लगते हैं कि शहरी कथा क्षेपक है लेकिन~~

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

⊙ महाकाव्यात्मक उपन्यास बनाने की चेष्टा:

प्रेमचंद ऐसे उपन्यास की रचना करना चाहते थे जो हिंदी साहित्य का पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास बने इसीलिए समाज की हर समस्या को व हर वर्ग को उपन्यास में जगह दी।

इसीलिए यही कारण सबसे महत्वपूर्ण है जिसमें प्रेमचंद ने अपने काव्य-कौशल का अद्भुत नमुना पेश करते हुए ग्रामीण-शहरी जीवन को न सिर्फ जोड़ा बल्कि दो कथाओं को साथ-साथ साधने का सफल प्रयास किया। इसीलिए डॉ. रामविलास शर्मा को कहना पड़ा, "1915-1936 तक का इतिहास अगर गायब हो जाए तो प्रेमचंद की रचनाओं से उसे ज्यादा प्रामाणिक ढंग से लिखा जा सकता है।"

(ख) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'यही सच है' नई कहानी की एक अद्भुत रचना है जिसमें मन्नू भंडारी ने निरीथ, संजय व दीपा के माध्यम से अन्तर्द्वन्द्व का अद्भुत नजारा पेश किया।

① कथानक: 'यही सच है' में कोई घटना मुख्यत: नहीं है बल्कि अलग-अलग स्थितियाँ एवं उनका वर्णन है जैसे दीपा का कानपुर आना, संजय से प्रेम होना, कलकत्ता जाना, वहाँ निरीथ का मिलना आदि।

अत: पारंपरिक कथानक हट गया है।

② चरित्र-योजना: मन्नू जी धारावाहिकों व फिल्मों की समर्थ लेखिका थी इसीलिए अन्त: संघर्ष के माध्यम से नाटकीयता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

का सुंदर संसार 'यही सच है' में देखने को मिलता है-

'तीन साल हो गए फिर भी निशीथ ने शादी क्यों नहीं की ? करे न करे, तुझे क्या !'

→ चरित्र परिस्थितियों के हाथों की कठपुतली है जिससे उनका स्वाभाविक विकास हुआ है -

'बार-बार मेरा मन कह रहा है कि निशीथ मेरे हाथ पर अपना हाथ रख दे।'

→ गहरी द्वन्द्व-योजना से नाटकीयता के गुण में वृद्धि हुई जो कहानी को आकर्षक बनाती है -

'ट्रेन गुजरने लगी लेकिन उसने अभी तक मुड़ कर नहीं देखा।'

⊙ भाषा-शैली : भाषा शिल्प का

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्राण - तत्व है। 'यही सच है' में मन्नूजी ने सहज, सरल व पारदर्शी भाषा का प्रयोग किया।

→ प्रतीकात्मक व बिंबात्मक भाषा के प्रयोग ने पाठक को आकर्षित किया -
'रजनीगंधा की महक फैल गई।'

→ छोटे संवादों में तद्भव शब्दों का प्रयोग
'विश्वास करो संजय, हमारा प्यार ही सच है। निशीथ का प्यार छल था, भ्रम था।'

कुल मिलाकर मन्नू भंडारी ने 'यही सच है' के माध्यम से समकालीन मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के अन्तर्द्वन्द्वों को उभारा। कि इसीलिए नई कहानी में ये द्वन्द्व को उद्घाटित करने में श्रेष्ठ स्थान रखती है।

(ग) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यशपाल एक मार्क्सवादी व मानववादी रचनाकार है जिन्होंने दिव्या (1945) में ऐतिहासिक आवरण में कल्पना के रंग से समकालीन समय की समय को उकेरा।

'दिव्या' में यशपाल की विचारधारा स्थूल रूप से देखने पर नजर नहीं आती लेकिन सूक्ष्म स्तर पर मूल्यों के रूप में अपनी मार्क्सवादी विचारधारा का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया।

① आर्थिक समस्या : दिव्या आर्थिक अभाव-ग्रस्त जिंदगी में दासी व वेश्यावृत्ति की परतंत्र जिंदगी जीने को मजबूर है-

'वे प्रति अगरह मास एक संतान उत्पन्न करती थी। स्थूल इन दासियों को न बेचकर, उनकी संतानों को बेचता था।'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

⊙ समतामूलक समाज की स्थापना: मारिश के माध्यम से यशपाल 'समरसतामूलक' समाज की स्थापना करना चाहते हैं जिसमें स्त्री-पुरुष समकक्ष हो

मारिश - आर्य आश्रय का आदान-प्रदान चाहता है।
दित्या - आश्रय दो आर्य।

⊙ धर्म का पाखंडी रूप उजागर: मार्क्सवाद धर्म को अफ़ीम की तरह भ्रामक मानता है। इसी समस्या को महेत व अधर्मी के प्रसंग से उजागर किया।

कहाँ वह बच्ची और कहाँ यह पचास साल का गिद्ध। रोज रात को अधर्मी रोती थी।

⊙ अलौकिकवाद व पाखंडवाद पर चोट: मार्क्सवाद अध्यवाद का खंडन करता है तथा इहलोकवाद को महत्व देता है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'भाग्य का अर्थ है मनुष्य की विवशता।

① मानवीय मूल्यों की स्थापना करना :

मार्क्सवाद अंतत: साम्यवाद की बात करता है जहां मनुष्य ही कर्त्ता है -

'मनुष्य भोक्ता नहीं कर्त्ता है। ~~वह स्वामी~~ ~~के~~ सम्पूर्ण माया उसकी ही क्रीड़ा है।'

② विवाह जैसे संबंधों में विश्वास नहीं :

मार्क्सवाद विवाह को नारी पर शोषण का एक उपकरण समझता है -

'कुलरानी आर्य पुरुष का प्रश्रय मात्र है। स्वत्वहीन होकर वह जीवित नहीं रहेगी।'

इस प्रकार यशपाल मारिश के माध्यम से सूक्ष्म स्तर पर मार्क्सवाद के मूल्यों का सफल प्रक्षेपण कर सके।

दृष्टि The Vision

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मैला - आँचल (1954) फणीश्वरनाथ रेणु का पहला आँचलिक उपन्यास है जिसमें रेणु ने सांस्कृतिक व ~~भौगो~~ भौगोलिक विशिष्टताओं से अँचल को ही नायक बनाकर पारंपरिक नायकत्व की परिभाषा को ध्वस्त कर दिया।

आँचलिक उपन्यास व राष्ट्रीयता, एक दूसरे के परस्पर विपरीत लगते है लेकिन सूक्ष्म विश्लेषण करने पर हम पाते है कि सांस्कृतिक व भौगोलिक विशिष्टताओं को छोड़कर, बाकी सभी आयामों में 'मैला - आँचल' अपनी आँचलिकता का अतिक्रमण करता है।

① सामाजिक समस्याएँ: 'मैला - आँचल' में मेरीगंज गाँव की जो समस्याएँ है यथा जातीय संघर्ष, नारी - शोषण, विधवा आदि

किसी न किसी रूप में सम्पूर्ण भारत में विद्यमान है -

"यादव लोग बार-बार लानी दिखाते हैं, राजपूतों के लिए ये शर्म की बात है।"

① नारी का शोषण : नारी का शोषण विभिन्न रूपों में जैसे - हिंसा, असमानता, संथालिनों का बलात्कार, अंधविश्वास आदि अलग-अलग रूप में सम्पूर्ण राष्ट्र में उपस्थित है -

'हुजूर, लड़की जात बिना दवा-पानी के आराम हो जाती है।'

① अंधविश्वास की समस्या : इस उपन्यास में जिन अंधविश्वासों का प्रचलन है जैसे - कमलों का अपशकुनी होना, डॉक्टर का जहर देना आदि आज भी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रासंगिक है -

'डॉक्टर ही रोग फैलाते हैं। सुई भोंककर जहर दे-देते हैं।' - जोतखी काका

⊙ आर्थिक समस्या: डॉ. प्रशान्त ने इतने समय तक गाँव में रहने के बाद रोग की जड़ के रूप में दो समस्याओं की पहचान की है -

'डॉक्टर ने रोग की जड़ पकड़ ली है - गरीबी व जहालत - ये दो कीटाणु हैं।'

⊙ राजनीतिक समस्या: स्वतंत्रता के समय गांधीवादी मूल्यों का पतन, राजनीति का अपराधीकरण आदि समस्याएँ पूरे भारत में व्याप्त हैं -

'अब सभी को अपनी-अपनी टोपी पर भूमिहार, राजपूत, कायस्थ, यादव - लिखवा लेना चाहिए।' — बावनदास

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

① रेणु का दृष्टिकोण: रेणु ने उपन्यास के प्राक्कथन में ही ये घोषणा की है कि मेरीगंज उन सभी ~~पिछड़े~~ पिछड़े गाँवों का प्रतीक है -

'यह है आँचलिक उपन्यास, मैला आँचल, कथानक है पूर्णिया। xxxx इस जिले के एक हिस्से के एक गाँव को, सभी पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर कथा-क्षेत्र का बिंदु बनाया है।'

इस प्रकार फणीश्वरनाथ रेणु ने तत्कालीन समाज की लगभग हर समस्या को 'मैला - आँचल' में समेटने का प्रयास किया जिससे यह राष्ट्रीय परिदृश्य का साक्षात्कार करने में पूरी तरह से सक्षम है।

(ख) 'बूढ़ी काकी' कहानी वृद्धावस्था का मार्मिक अंकन करती है। इस कथन के परिप्रेक्ष्य में 'बूढ़ी काकी' की संवेदना पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बूढ़ी काकी (1921) प्रेमचंद की वृद्धजनों की समस्या पर लिखी जाने वाली मुख्यत: पहली कहानी है जिसमें 'असुरक्षा की समस्या' केन्द्र में है।

'बूढ़ी-काकी' के पात्र लाडली, बुद्धिराम, रूपा है जो ~~भोलाराम~~ सुखराम के तिलक पर भोजन का आयोजन करते हैं। पकवानों की खुशबू से बूढ़ी-काकी के मन में भूख जोरों से घर गयी है।

वह दो बार पकवान बनने वाली जगह पर जाकर, रूपा व बुद्धिराम की लताड़ खाकर वापस आयी है। उसकी हरकतें बच्चों जैसी प्रतीत होने लगी है- 'बुढ़ापा बचपन का पुनरागमन होता है।'

वह बच्चों के समान खाना खाने को लालायित है। सारे मेहमान जाने के

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बाद भी रूपा उसे खाना खिलाना भूल जाती है। तब लाडली अपनी सहृदयता से बूढ़ी काकी को खाना खिलाती है।

लेकिन उसकी भूख शान्त न होकर बढ़ जाती है। वह लाडली के साथ जूठी पत्तलों से खाना उठाकर खाती है व भूख शान्त करती है -

'ब्राह्मणी की जूठी पत्तलों से खाना उठाकर खाने से शोकमय दृश्य क्या हो सकता है।'

जब रूपा व बुद्धिराम काकी को पत्तलों से खाना खाते देखते हैं तो उनको अपनी संवेदनहीनता पर घिन आती है। उन्हें अहसास होता है कि जिसकी वजह से हर साल 200 रुपए घर में आते हैं, उसे खाने हेतु

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भोजन भी नसीब नहीं हो रहा।

अंततः उनका हृदय-परिवर्तन होता है और वे काकी को भरपेट खाना खिलाते हैं।

ऐसी ही समस्या भीष्म-साहनी की 'चीफ़ की दावत' में विद्यमान है जहां बूढ़ों को 'अप्रस्तुतीयोग्य' मानकर, उनको 'चुका हुआ' समझकर उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है।

अतः प्रेमचंद ने अपनी सहृदयता व आत्मीयता का परिचय देते हुए, इस्कूल मनोविज्ञान का प्रयोग करके बूढ़ों की समस्या को साहित्य का हिस्सा बनाने का सराहनीय प्रयास किया।

(ग) 'धनिया प्रेमचंद की सर्जनात्मक आँख है।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में धनिया का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गोदान (1936) प्रेमचंद का चरम यथार्थवाद को प्रदर्शित करने वाला महाकाव्यात्मक उपन्यास है जिसमें धनिया को प्रेमचंद की सर्जनात्मक आँख कहा गया है।

आरंभ पृष्ठ पर ही धनिया अपने तीन बच्चों की मृत्यु (दवा के अभाव में) से दुखी है। होरी कहता है -

'धनिया का मन कहता है कि अगर पैसे होते तो तीनों बच्चे दवा-दारू से बच जाते।'

धनिया के माध्यम से प्रेमचंद ने यथार्थवाद को उभारा है। धनिया का चरित्र प्रगतिशील व सशक्त है। जब गोबर झुनिया (विधवा) से शादी करके घर लाता है तब धनिया

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

साहस का परिचय देते हुए उसे घर में जगह देकर अपनाती है।

'धनिया' के माध्यम से होरी को की कमजोरियों व यथास्थितिवादी मानसिकता को उजागर करने का प्रयास किया। धनिया के माध्यम से हास्य-व्यंग्य बड़ा परसन रहती है। कहती है ऐसा मर्द आज तक कभी नहीं देखा।'

का पुट भी रचना को सर्जनात्मक बनाता है।

उपन्यास के अंत तक धनिया अभाव व विपन्नताओं को झेलने के बाद भी एकचित्त होकर हर कठिन समय में साथ देती है -

होरी का

'विपन्नता के अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था जिसको पकड़कर सागर को पार कर रही थी।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अंततः विद्रोही-चेतना भी प्रेमचंद धनिया के माध्यम से दिखाते हैं जब होरी की मृत्यु पर गो-दान की माँग की जाती है। -

धनिया दातादीन से - महाराज, घर में पैसे हैं न बछिया, न गाय। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

इस प्रकार धनिया के माध्यम से प्रेमचंद चरम यथार्थवाद को प्रतिपादित करते हैं तथा नारी के सशक्त चरित्र को गाँधीजी की तरह उभारने में कामयाब होते है।

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) शिल्प की दृष्टि से 'कुटज' निबंध का विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) ''महाभोज' उपन्यास के 'दा साहब' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)